आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ के प्रेरणा स्त्रोत

पूज्य मुनिपुंगव सुधासागर महाराज का परिचय

शोध पीठ के प्रेरणा स्त्रोत परमपूज्य निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागर जी महाराज के व्यक्तित्व कृतित्व ने जन-जन को प्रभावित किया है | जिन्हें परम जिनधर्म प्रभावक वास्तुविद, सिद्धवाक्, जैन-धर्म-दर्शन संस्कृति संरक्षक और शिक्षानुरागी आदि उपाधियों से सुशोभित किया गया है |

मुनि श्री का जन्म स्थान जिला सागर स्थित ग्राम ईशुरवारा है | इनके पिता का नाम रूपचन्द्र एवं माता का नाम शान्तिबाई है | आपका गृहस्थ अवस्था का नाम जय कुमार था | आपने प्रारम्भिक शिक्षा गृह-नगर ईशुरवारा एवं उच्च शिक्षा मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर से प्राप्त की | आपने परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरी में दिनांक 19 अक्टूबर सन् 1978 को ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर वैराग्य धारण किया | गुरु के मंगल आशीर्वाद से 10 जनवरी,सन् 1980 को नैनागिरी में क्षुल्लक दीक्षा, ऐलक दीक्षा 15 अप्रैल, सन 1982 एवं मुनि दीक्षा 25 सितम्बर, सन् 1983 ईसरी जिला-गिरीडीह में संपन्न हुई थी | मुनि श्री द्वारा समाज कल्याण के लिए अनेक कार्य किए गए जैसे- **शिक्षा** के क्षेत्र में इनकी प्रेरणा से ललितपुर, जयपुर, ब्यावर, अजमेर, टोंक राजस्थान, आदि अनेक स्थानों पर शिक्षायतनो की स्थापना की गयी

| देश के युवाओं को शिक्षित करने के क्षेत्र में उन्होंने श्रमण संस्कृति संस्थान की स्थापना की जिसमें प्रत्येक वर्ष अनेक स्नातक तैयार हो रहे हैं जो श्रमण संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन एवं प्रचार प्रसार में महनीय योगदान दे रहे हैं| नारी शिक्षा के क्षेत्र में उनकी प्रेरणा से “संत सुधासागर कन्या छात्रावास “ की स्थापना की गयी जिसमें देश की बालिकाएं ज्ञानार्जन कर शिक्षा जगत में महनीय योगदान दे रही हैं |

मुनिश्री की मंगल प्रेरणा एवं समाज के श्रेष्ठियाँ एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों से विशेष सहयोग से 20 जून 2024 को आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ की स्थापना जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा के क्षेत्र में विशेष अध्ययन-अध्यापन एवं शोध कार्य के लिए की गयी | जो सम्यक रूप से संचालित हो रही है | उनके द्वारा तीर्थ जीर्णोद्धार एवं नवतीर्थ संरचना, श्रावक संस्कार शिविर, साहित्य लेखन, संगोष्ठियाँ आदि अनेक कार्य इनकी प्रेरणा से हुए हैं | इस प्रकार भारतीय संस्कृति को मुनिश्री का अतुलनीय योगदान है|